

અધ્યાય ૨

भारतीय अर्थव्यवस्था (१९५०-१९९०)

अर्थव्यवस्था के प्रकार- → बाजार अर्थव्यवस्था

→ समाजवादी अर्थव्यवस्था

→ मिश्रित अर्थव्यवस्था

योजना आयोग का गठन (पंचवर्षीय योजनाएँ)

११५०

योजनाओं के उद्देश

- | | |
|-------------------|------------|
| - वृद्धि | - आधुनिकता |
| - आत्म निर्धारिता | - समानता |

कृषि - भूमिसुधार

- हरित क्रान्ति - वाजार अधिशेष - सहायिकी

उद्योग एवं व्यापार

१९५६ की औद्योगिक नीति प्रस्ताव

- छोटे पैमाने के उद्योग

विभिन्न औद्योगिक नीतियों का विकास पर प्रभाव

१९४८ की औद्योगिक नीति

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (१ अंक)

१. प्राथमिक क्षेत्र से क्या अभिप्राय है?

प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, वानिकी, वन आदि को शामिल किया जाता है प्राकृतिक स्रोत इसमें शामिल किया जाते हैं।

२. द्वितीय क्षेत्र से क्या अभिप्राय है?

यह वह क्षेत्र है जिसमें उद्यम एक प्रचार की वस्तु को दूसरे प्रकार में परिवर्तित करते हैं।

३. तृतीयक क्षेत्र का क्या अभिप्राय है?

तृतीयक क्षेत्र वह क्षेत्र है जो सेवाओं का उत्पादन करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (३/४ अंक)

१. स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थ व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं बताइए।

- कृषि आजीविका का प्रमुख स्रोत
- अपर्याप्त कृषि उत्पादन
- कृषि का सीमित व्यापारी करण
- आधारभूत उद्योग का अभाव

२. योजना आयोग की स्थापना कब हुई? इसके प्रमुख उद्देश्य क्या हैं?

योजना आयोग की स्थापना १९५० में हुई।

उद्देश्य

- आधुनिकता - विकास
- आत्मनिर्भरता - समानता

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (६ अंक)

१. स्वतंत्रता के समय भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़े पन के प्रमुख कारणों की व्याख्या करें।

- उत्पादकता का निम्न स्तर - निम्न कोटि की तकनीकी
- सरकार की ओर से उदासीनता - सिचाई के साधनों का अभाव
- कृषकों को उचित प्रशिक्षण का अभाव

२. द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

१) द्वितीयक क्षेत्र

अ) उद्योग ब) निर्माण

२) तृतीयक क्षेत्र

अ) बैंकिंग ब) वीमा स) परिवहन ड) संचार इ) व्यापार